प्रकाशन तिथि : 15 दिसम्बर, 2020
प्रेषण तिथि : 19 दिसम्बर, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 19 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

देशभर में श्रद्धापूर्वक मनाई पूज्य श्री की पुण्यतिथि

7 दिसंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 42वीं पुण्यतिथि देशभर में श्रद्धापूर्वक मनाई गई। विभिन्न स्थानों पर भौतिक व वर्चुअल कार्यक्रमों के माध्यम से संघ के स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने पूज्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित कर अपने मार्गदर्शक व प्रेरक के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। स्वयंसेवकों द्वारा प्रतिवर्ष पुण्यतिथि के दिन बाड़मेर के राजपूत मोक्षधाम में स्थित पूज्य तनसिंह जी की छतरी पर सूर्योदय से पूर्व पहुंच कर पुष्प अर्पित करने की परंपरा रही है। इसी परंपरा का निर्वाह करते हुए 7 दिसंबर को सूर्योदय से पूर्व माननीय संघप्रमुख श्री आलोक आश्रम से मोक्षधाम पहुँचे तथा पूज्यश्री की छतरी पर पुष्प चढ़ाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान बाड़मेर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक भी उपस्थित रहे। इसी प्रकार जयपुर स्थित संघ के केंद्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रातः 7 से 8 बजे तक आयोजित कार्यक्रम में स्वयंसेवकों द्वारा पूज्य तनसिंह जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए गए तथा सहगीत व भजनों का गायन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी, संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह जी बेन्यांकाबास तथा शहर में रहने वाले स्वयंसेवक उपस्थित रहे। महावीर सिंह जी सरवड़ी द्वारा 'प्रभुजी मोरे अवगुण चित्त न धरो' भजन का गायन करवाया गया। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

'क्षात्र धर्म को समझें और समझाएं'

(श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की बैठक)

क्षात्र धर्म कोई पंथ या पूजा पद्धति नहीं है बल्कि दायित्व बोध है। सनातन संस्कृति का आधार है। परमेश्वर की सृष्टि के प्रति हमारा कर्तव्य पथ है। यह बात समझें और समझाएं। 6 दिसम्बर को श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय टीम की बैठक में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीरसिंह जी सरवड़ी ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि प्रायः समाज में यह चलन रहा है कि बैठकें होती हैं, चर्चा होती है, निर्णय होते हैं लेकिन धरातल पर कुछ नहीं होता। इस चलन को तोड़ना आवश्यक है। इसीलिए जो तय करते हैं उसे करना प्रारम्भ करें। जब काम करेंगे तो आगे से आगे काम के क्षेत्र भी खुलते जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रेस में, सोशल मीडिया में कोई भी वक्तव्य देते समय सावधानी रखें कि हमारी बात भी मजबूती से रखें और किसी की भावनाएं भी आहत न हों। किसी भी प्रकार का अलगाव प्रदर्शित न करें। पूरा संसार मनु की संतान है, मूलतः राजपूत ही है, इस अवधारणा को सदैव ध्यान में रखते हुए हमारी संस्कृति, इतिहास आदि पर हो रहे हमलों का प्रतिकार करें। हमारे इतिहास पर विभिन्न प्रकृति के लोग हमला कर रहे हैं, सभी का सावधानीपूर्वक जवाब भी देवें। जो भी श्रेष्ठ होता है, उसको कमजोर सिद्ध करने के लिए कमजोर लोग इस तरह का प्रयास करते हैं, यह स्वाभाविक है, इसी के तहत हमारे पर वैचारिक एवं अन्य प्रकार के आक्रमण हो रहे हैं, उनको समझें व संतुलित जवाब देवें।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पंचायती राज चुनाव, 6 राजपूत बने जिला प्रमुख

प्रदेश के 33 जिलों में से 21 में पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव संपन्न हो चुके हैं। इन 21 में से जिला प्रमुख की 11 सीटें आरक्षित थी। शेष रही 10 अनारक्षित सीटों में से 6 पर राजपूत जिला प्रमुख बने हैं। इसके अलावा 33 पंचायत समितियों में प्रधान भी राजपूत बने हैं। पार्टियों द्वारा जिला परिषद सदस्यों के लिए टिकटें देने में उपेक्षापूर्ण व्यवहार के बावजूद 6 जिलों में ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज के मुखिया बनने में मिली यह सफलता प्रसन्नता का विषय है एवं चुने गए सभी जिला प्रमुख व प्रधान बधाई के पात्र हैं। इन चुनावों ने फिर से यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि हम पूरे मन से योजना बनाकर रणनीति के साथ लोकतंत्र के समर में उतरें तो यहां भी हमारे लिए असंभव कुछ नहीं है। जैसलमेर, सीकर, बूंदी, उदयपुर, पाली एवं अजमेर के मतदाताओं को भी बधाई दी जानी चाहिए कि उन्होंने राजपूत जिला प्रमुख बनने की परिस्थितियां पैदा करने में सहयोग दिया। लेकिन इन चुनावों ने हमें एक और संदेश भी दिया है और वह संदेश विशेष रूप से बाड़मेर से निकल कर आया है। जिस प्रकार एक जाति विशेष का जिला प्रमुख एवं उप जिला प्रमुख बनाने के लिए राजनीतिक दलों से जुड़े लोगों ने अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धताओं को नगण्य बनाकर जातीय निष्ठा को प्रमुखता दी वह हमारे लिए सीख है। राजनीतिक दल से टिकट लेकर, उसके सिम्बल पर चुनाव जीतकर भी राजनेता अपनी निष्ठा को छोड़ने में तनिक भी विचार नहीं करते तो हम मतदाता के रूप में कौनसी प्रतिबद्धता की बात करते हैं? आज नेताओं में राजनीतिक पार्टियों के प्रति एवं राजनीतिक पार्टियों में विचारधारा के प्रति निष्ठा की बात बेमानी है। उनका लक्ष्य केवल सत्ता प्राप्ति है, इसकी पुष्टि हम पंचायत से लेकर संसद तक विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से कर सकते हैं इसीलिए हमें एक मतदाता के रूप में पार्टियों का बंधन छोड़ना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्रीमती चन्द्रावती कंवर
जिला प्रमुख, बूंदी

श्रीमती गायत्री कंवर
जिला प्रमुख, सीकर

श्रीमती सुशीला कंवर
जिला प्रमुख, अजमेर

श्री प्रतापसिंह
जिला प्रमुख, जैसलमेर

ममता कंवर
जिला प्रमुख, उदयपुर

श्रीमती रश्मि सिंह
जिला प्रमुख, पाली

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित पुस्तक 'बदलते दृश्य' के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में उल्लेखित शेखावटी क्षेत्र के महापुरुष द्वारका प्रसाद के बारे में :

द्वारकादास जी राजा रायसल दरबारी के पौत्र और गिरधरदास जी के पुत्र थे। अपने पिता गिरधरदास जी की मृत्यु के बाद वि.सं. 1680 में वो खण्डेला के शासक बने। उन्होंने अपने पिता के साथ कई युद्धों में भाग लिया था और गिरधरदास जी की अनुपस्थिति में राज कार्य भी सुचारू रूप से संभालते थे। शासक बनने के बाद अपने पिता के स्थान पर शाही सेवा में चले गए। उस समय मेवात इलाके में बादशाह के विरुद्ध विद्रोह फैला हुआ था और मेवाती सारे क्षेत्र में उपद्रव कर रहे थे। बादशाह के कई योग्य सेनापति उस विद्रोह को दबा पाने में असफल हो चुके थे। उन मेवातियों के विरुद्ध उनका दमन करने हेतु द्वारकादास जी को भेजा गया। राजा द्वारकादास जी ने अपनी वीरता और कूटनीति से मेवातियों के उस विद्रोह को कुचल दिया। उनकी इस सफलता से जहांगीर उनसे अत्यधिक प्रसन्न हुआ और दरबार में उनका महत्व काफी बढ़ गया। दरबार में उनके बढ़ते महत्व से कई दरबारी ईर्ष्या करने लगे। ऐसे ही कुछ ईर्ष्यालु दरबारियों ने जहांगीर से कहा कि द्वारकादास अत्यन्त पराक्रमी है और निहत्थे ही सिंह को मार सकते हैं ऐसा सुनकर बादशाह ने द्वारकादास जी को सिंह से लड़ने के लिए कहा। नियत दिन अखाड़े में द्वारकादास जी निहत्थे सिंह से युद्ध के लिए प्रस्तुत हुए। भूखे सिंह ने द्वारकादास जी पर झपटा मारा, द्वारकादास जी ने उसके पंजे को अपने मजबूत हाथों में पकड़ कर विवश कर दिया। द्वारकादास जी पर झपटा मारने के लिए तत्पर सिंह अब उनके पैरों को चाटने लगा। यह दृश्य देखकर जहांगीर सहित उपस्थित सभी लोग दंग रह गए। जहांगीर के बाद शाहजहां के समय खानेजहां लोदी ने विद्रोह कर दिया। खानेजहां लोदी और द्वारकादास जी परस्पर मित्र थे। खानेजहां लोदी के विरुद्ध भेजी गई सेना में द्वारकादास जी भी थे। मध्यप्रदेश में रीवां के नजदीक खानेजहां लोदी और शाही सेना में युद्ध हुआ। युद्ध क्षेत्र में खानेजहां को देख द्वारकादास जी ने अपने घोड़ा उधर बढ़ाया। खानेजहां लोदी को ललकारते हुए द्वारकादास ने अपने भाले को प्रहार उस पर किया जो खानेजहां के सीने को चीरते हुए घोड़े को बेध गया। मरते-मरते खानेजहां ने जो वार द्वारकादास जी पर किया उससे द्वारकादास जी भी वीरगति को प्राप्त हुए। इस प्रकार दोनों मित्र एक-दूसरे के प्रहार से मृत्यु को प्राप्त हुए।

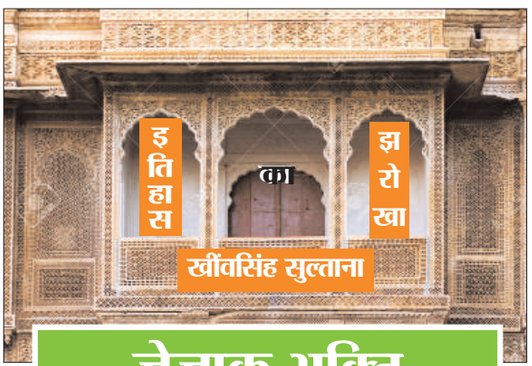

जेजाक भुक्ति (बुन्देलखण्ड के चन्देल)

गण्ड के पश्चात उसका पुत्र विद्याधर चन्देल साम्राज्य का शासक बना। वह चन्देल वंश का सर्वाधिक योग्य व शक्तिशाली शासक था। विद्याधर के शासनकाल की जानकारी उसके लेखों तथा समकालीन मुस्लिम लेखकों के विवरण से मिलती है जो उसे तत्कालीन भारत का सबसे शक्तिशाली शासक मानते हैं। विद्याधर का शासनकाल (1019-1029 ई.) तक रहा। 1019 ई. में महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया। कन्नौज के प्रतिहार शासक राज्यपाल ने बिना युद्ध के ही महमूद की अधीनता स्वीकार कर ली। राज्यपाल की कायरता से विद्याधर अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और राज्यपाल को दण्डित करने का निश्चय किया तथा कन्नौज पर आक्रमण कर दिया। 'दूबकुण्ड लेख' से पता चलता है कि विद्याधर के सेनानायक ग्वालियर के कच्छवाह अर्जुन ने युद्ध में राज्यपाल का वध कर दिया, इसके उपरान्त विद्याधर ने राज्यपाल के पुत्र त्रिलोचनपाल को कन्नौज का शासक बना दिया। यह महमूद गजनवी को विद्याधर की ओर से खुली चुनौती थी। महमूद ने 1019-20 में चन्देल राज्य पर आक्रमण किया। दोनों पक्षों में किसी नदी के किनारे रात्रिकालीन युद्ध हुआ जो अनिर्णित रहा। इसके बाद 1022 ई. में महमूद ने पुनः चन्देल राज्य पर आक्रमण किया और ग्वालियर के दुर्ग पर घेरा डाला और बाद में कालिंजर के दुर्ग का घेरा डाला, दीर्घकालीन घेराबंदी के बाद भी महमूद को कोई सफलता नहीं मिली, विद्याधर की शक्ति से शांकित महमूद ने अंत में विद्याधर से संधि की और वापिस लौट गया। फिर कभी चन्देल राज्य पर आक्रमण का साहस ना कर सका। इसके अतिरिक्त विद्याधर ने मालवा के परमार शासक भोज तथा कलचुरी शासक गोगेयदेव को परास्त कर अपनी अधीनता में लिया। विद्याधर के पितामह यंग ने जिस विशाल साम्राज्य का निर्माण किया उसने उसे अपने वीरतापूर्ण कार्यों से गौरवान्वित किया। विद्याधर का शासनकाल चन्देल साम्राज्य का चरम उत्कर्ष का काल था। विद्याधर के बाद चन्देल साम्राज्य को कमजोर शासकों का शासन मिला, कई कमजोर शासकों के बाद चन्देल साम्राज्य को मदन वर्मा (1129-1163 ई.) के रूप में एक शक्तिशाली शासक मिला, मऊ लेख से ज्ञात होता है कि उसने चेदि तथा परमार शासकों को परास्त किया। उसने चन्देल साम्राज्य के सभी भागों पर पुनः अपना आधिपत्य स्थापित किया। चन्देल वंश का अन्तिम प्रतापी शासक परमार्दि देव हुआ जिसने (1165-1203 ई.) तक शासन किया उसके दो जग प्रसिद्ध सेनानायक आल्हा और ऊदल थे जो पृथ्वीराज चौहान के साथ हुए भीषण युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। तेरहवीं शताब्दी के अंत तक चन्देल राज्य का अस्तित्व बना रहा। चन्देल शासकों के काल में कला और साहित्य की अत्यधिक उन्नति हुई। इस काल की कला के विश्व प्रसिद्ध उदाहरण खजुराहों के मंदिरों के रूप में विद्यमान हैं जिनमें 'कन्दारिया महादेव' का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है। **(क्रमशः)**

साप्ताहिक शाखा में संघ प्रमुख श्री

बाड़मेर स्थित मोहन गुरुकुल छात्रावास में 6 दिसम्बर को आयोजित साप्ताहिक शाखा में माननीय संघ प्रमुख श्री एवं बाड़मेर के अन्य वरिष्ठ स्वयंसेवक भी शामिल हुए। शाखा में उपस्थित स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि साधनागत संस्कार ही जीवन में स्थाई होते हैं। संघ के साधना मार्ग में प्रवृत्त होने से ऐसे संस्कारों का बीजारोपण हमारे में हो चुका है। उस बीज को बचाए रखने एवं अंकुरित कर आगे बढ़ाने के लिए आत्मानुशासन ही प्रमुख उपाय है। आत्मानुशासन से ही नागरिक भाव का विकास होता है, नागरिक गुणों का विकास होता है। यहीं से समाज चरित्र का प्रारम्भ है। अपने आपको आत्मानुशासन में प्रवृत कर साधनागत जीवन में सफल होने वाला व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। शाखा में पूज्य तनसिंह जी की डायरी के अवतरणों पर चर्चा के दौरान संघ प्रमुख श्री ने कहा कि साधना मार्ग पर आरुढ़ होने के बाद स्वयं को उस पर बनाए रखने के लिए सतत् अभ्यास एवं सतत् प्रयत्न की आवश्यकता है। इसके लिए संघ द्वारा प्रदत्त नियमित अभ्यास के कार्यक्रमों में स्वयं को नियोजित रखे। शाखा में संभाग प्रमुख कृष्णसिंह राणीगांव के साथ देवीसिंह माडपुरा, रामसिंह माडपुरा, प्रकाशसिंह भुरटिया आदि वरिष्ठ स्वयंसेवक भी उपस्थित रहे।

'आत्म रक्षक शक्ति है प्रतिहिंसा की भावना'

जो समाज बदला लेना जानता है वह जीवित माना जा सकता है और जीवित रह सकता है। लेकिन बदला किससे लेना है यह भी स्पष्ट होना जरूरी है। आत्मावलोकन कर हमारी उन वृत्तियों से भी बदला लेना है जिनके कारण विरोधी हम पर हमले में सफल हुए और उन विरोधियों से भी बदला लेना है जिन्होंने हमें मिटाने के प्रयत्न सदा की तरह जारी रखे हुए हैं। केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' की साप्ताहिक शाखा में रविवार 6 दिसम्बर को 'समाज चरित्र' पुस्तक के अंतिम बिन्दु 'प्रतिहिंसा की भावना' पर चर्चा के दौरान वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीरसिंह जी सरवड़ी ने विषय को समझाते हुए उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि अहिंसा आदि गुण व्यक्तिगत उन्नति के साधन हो सकते हैं लेकिन समाज व्यवस्था व राज्य व्यवस्था में अहिंसा का प्रयोग अव्यवहारिक है। इसीलिए भारतीय नीतिज्ञों ने 'शठे शाठ्यं समाचरेत' का मंत्र समाज को दिया। प्रतिहिंसा की भावना प्रकृति का स्वभाव है। गाय जैसा साधारण प्राणी भी अन्याय के खिलाफ प्रतिकार करता है। इस प्रकार प्रतिहिंसा की भावना जीवित होने का प्रमाण है। प्रतिहिंसा की भावना विहीन समाज या तो मुर्दा है या अतिशय कायर है। प्रतिहिंसा की भावना समाज की आत्मरक्षक शक्ति है। इसके अभाव में व्यक्ति साधारण हमलों को भी नहीं झेल पाता और उसे मिटने से रोका नहीं जा सकता। चर्चा के दौरान यह बात भी उभर कर आई कि हमारे समाज में प्रतिहिंसा की भावना तो है लेकिन उसे सही दिशा देनी आवश्यक है। सही दिशा के अभाव में वह निष्प्रभावी ही नहीं बल्कि अन्य घातक भी हो जाती है।

हार्दिक वंदन एवं सादर श्रद्धांजलि

राव रिड़मल जी के पुत्र एवं हमारे पूर्वज **राव रूपाजी** की **597वीं जयंती** पर **हार्दिक वंदन** एवं सादर **श्रद्धांजलि**।

राव रूपाजी का जन्म संवत् 1480 में मार्गशीर्ष शुक्ला अष्टमी को हुआ था। आगामी 22 दिसम्बर को उनके **वंशज रूपावत परिवार** उन्हें समारोह पूर्वक **श्रद्धांजलि** अर्पित करेंगे।

श्रद्धानवतः

करणी सिंह पुत्र कल्याण सिंह जी	भीख सिंह पुत्र दुर्जन सिंह जी	माधो सिंह पुत्र दीप सिंह जी	राजेंद्र सिंह पुत्र दीप सिंह जी
छैलू सिंह पुत्र हीर सिंह जी	सवाई सिंह पुत्र लक्ष्मण सिंह जी	हमीर सिंह पुत्र प्रभू सिंह जी	भगवान सिंह पुत्र रेवंत सिंह जी
रुघनाथ सिंह पुत्र गजे सिंह जी	भैरु सिंह पुत्र अखे सिंह जी	भोपाल सिंह पुत्र सूरत सिंह जी	दिलीप सिंह पुत्र नारायण सिंह जी
गजेंद्र सिंह पुत्र भंवर सिंह जी	कुलदीप सिंह पुत्र भंवर सिंह जी	चंद्र सिंह पुत्र तेजू सिंह जी	हीर सिंह पुत्र डूंगर सिंह जी
भीम सिंह पुत्र अमर सिंह जी	समंदर सिंह पुत्र मूण सिंह जी	नरवत सिंह पुत्र भीख सिंह जी	नारायण सिंह पुत्र मूण सिंह जी
राजेंद्र सिंह पुत्र पृथ्वी सिंह जी	आम सिंह पुत्र अनोप सिंह जी	रिड़मलसिंह पुत्र किशन सिंह जी	एवं समस्त रुपावत परिवार **भेलू**

संपादकीय

युग प्रवर्तक बनने की चाह

जिस व्यक्ति में भावी पीढ़ियों द्वारा पूजित होने की चाह पैदा होती है, युग प्रवर्तक बनने की चाह पैदा होती है वे स्वयं को अपने पूर्वजों से श्रेष्ठ साबित करने के लिए उनको कमतर सिद्ध करने का प्रयास करते है। हमारे देश में भी विगत 100-150 वर्षों में ऐसे अनेक लोग हुए और आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है। वास्तव में तो यह सोच भारत की सोच नहीं रही है। भारत की सामान्य एवं स्वाभाविक सोच तो अपने पूर्वजों के सम्मान की सोच रही है और इसीलिए हम अपने आप को देवताओं की संतान मानते हैं, बंदरों की नहीं। हम यह मानते हैं कि हम देवत्व से पतित होकर मनुष्यत्व को प्राप्त हुए हैं और पुनः देवत्व प्राप्त करना हमारा जीवन लक्ष्य है। हमारे यहां के समस्त आचार विचार, सभी रीति रिवाज एवं समस्त परम्पराएं उसी देवत्व की ओर अग्रसर होने के होते है। हमारे सामने हमारे जीवन एवं भावी जीवन का स्पष्ट लक्ष्य जनजीवन की सामान्य अवधारणाओं में समाया रहता है और हमारी संस्कृति के अनुसार संसार अपूर्णता से पूर्णता की ओर अग्रसर है और एक व्यक्ति के रूप में हम इस जीवन में उस यात्रा के एक पड़ाव का हिस्सा मात्र हैं। इस प्रकार हमारी विशुद्ध भारतीय सोच के अनुसार व्यक्ति का जीवन सृष्टि क्रम का एक पूर्जा मात्र है जिसका उद्देश्य विश्वात्मा के दृष्टिकोण से अपनी सार्थकता सिद्ध करना है। लेकिन इस आलेख के शीर्षक में हमने जिन लोगों की चर्चा की है वे इस सोच के प्रतीक नहीं हैं। वे तो पश्चिम के उस विकासवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके अनुसार व्यक्ति बंदर से मनुष्य बना है। उनके अनुसार उनके पूर्वज असभ्य जंगली एवं असंस्कृत लोग थे और वे अब निरन्तर उस असभ्यता का त्याग कर विकासोत्मुख हैं। इसीलिए उनके लिए भगवान राम या भगवान कृष्ण आदर्श कल्पना मात्र है। वे यह मान ही नहीं सकते कि ऐसा भी कोई व्यक्ति हो सकता है जो अपने आप में पूर्ण हो। उनके लिए हरिश्चन्द्र, रंतिदेव, दिलीप, शिवि जैसा त्याग मात्र कल्पना ही है क्यों कि वे यह मान ही नहीं सकते कि अतीत भी इतना गौरवमयी हो सकता है वे हमारी तरह अपने पूर्वजों पर गर्व नहीं करते बल्कि शर्मिंदा होते है। ना ही उनके समक्ष हमारी तरह जीवन का कोई स्पष्ट लक्ष्य है इसीलिए वे विभिन्न प्रकार के प्रयोगों में फंसकर नित्य नए वाद प्रस्तुत करते रहते हैं और फिर उन वादों पर विवाद खड़े कर वाद विवाद में उलझे रहते हैं। ऐसे विचार से प्रभावित भारतीय और हमारे अपने लोग भी भारत की सामान्य सोच के अनुरूप अपने पूर्वजों एवं संस्कृति पर गौरवान्वित होने की अपेक्षा अपने पूर्वजों पर शर्मिंदा और प्राचीन संस्कृति से खिन्न और रुष्ट है। ऐसे सब लोग अपने आपको सामान्य जनमानस की सोच में समाई भारतीयता से अपने आपकी सोच को विकसित एवं उन्नत सिद्ध करने को उद्यत होते हैं और जनमानस के सामने नवीनता के बहाने अपने अपूर्ण आदर्श प्रस्तुत कर उनकी स्वभागवत सामान्य कमजोरियों का फायदा उठाकर उनके भाग्य विधाता बनने का प्रयास करते हैं। वे पूर्णता के लक्ष्य को अपनी अपूर्ण और अधूरी सोच के कारण धरातल से दूर आदर्शवाद के रूप में प्रचारित करते हैं और साधना में होने वाले संघर्ष से जी चुराने वाले मनुष्यों की सहज ही ढलान की ओर प्रवाहित होने वाली बुद्धि को प्रभावित कर उनके नए नए प्रभु बनने का प्रयास करते हैं। हालांकि ऐसे प्रभुओं की प्रभुता समय की राख के साथ बहुत कम समय में उड़ जाया करती है। फिर भी समाज के अनेक सामान्य बुद्धि के लोग इनके बहकावे में आकर एक बार तो लक्ष्य भ्रष्ट हो ही जाते हैं। इसीलिए हमारे लिए आवश्यक है कि हम ऐसे नव प्रभुओं के फेर में फंसकर कहीं अपूर्णता की ओर अग्रसर न हो जावें। हमारी परम्परा हमारे पूर्वजों के महान कार्यों का अनुसरण कर उनके द्वारा प्रशस्त पथ पर वर्तमान देश, काल, परिस्थिति के अनुरुप आचरण करते हुए पूर्णता की ओर कदम बढ़ाने की रही है। हमारे यहां अपने पिता की यदि कोई कमी भी है तो उसे प्रचारित करना धृष्टता मानी जाती है। अपने पूर्वजों को सदैव पूज्य और श्रेष्ठ ही माना जाता है। स्वयं को उनके समक्ष छोटा ही माना जाता है, कभी अपने आपको उनसे श्रेष्ठ साबित करने का प्रयास नहीं किया जाता। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसी ही प्रेरणा है। यहां पूर्वजों के महान आदर्शों को वर्तमान देश, काल और परिस्थिति के अनुरूप धरातल पर उतारने का अभ्यास करवाया जाता है। यहां ना ही तो अव्यवहारिक आदर्शवाद है और ना ही व्यवहारिकता के नाम पर पतनोन्मुखी प्रवाह। एक संतुलित मार्ग है जो हमारी अपूर्णता को पूर्णता की ओर अग्रसर करता है। परिणाम हमारे तत्परता पूर्वक बोध युक्त अनुसरण पर निर्भर करता है।

खरी-खरी

'यह कैसा अहिंसक आंदोलन'

आजादी के आंदोलन में महात्मा गांधी द्वारा सत्याग्रह एवं अहिंसा को एक साधन के रूप में प्रतिष्ठापित किया। गांधीजी को पढ़ने पर पाते हैं कि उनकी अहिंसा का आधार अन्य किसी को कष्ट दिए बिना अपने सत्य का आग्रह करना था। स्वयं को कष्ट देकर सामने वाले को अपना सत्य आग्रह स्वीकार करने के लिए बाध्य करना उनका अहिंसा एवं सत्याग्रह था। गूढ़ अर्थों में जाएं तो यह भी अहिंसा नहीं है बल्कि एक प्रकार की हिंसा ही है, बस इसमें कष्ट किसी अन्य को पहुंचाए बिना स्वयं के शरीर को दिया जाता है। इस प्रकार यदि कष्ट नहीं पहुंचाना ही अहिंसा माना जाए तब तो गांधीजी की परिभाषा भी समीचीन नहीं बैठती लेकिन सामान्य अर्थों में देखें तो यह समझ में आता है कि जिस आंदोलन में किसी अन्य को कष्ट पहुंचाए बिना अपनी बात कही जाती है, वह अहिंसक आंदोलन है। गांधीजी के बाद उनके अनुयायियों ने भी ऐसे अहिंसात्मक आंदोलनों को आगे बढ़ाया और प्रायः आजकल ऐसे सभी आंदोलनों को अहिंसक आंदोलन कहा जाता है जिनमें कोई तोड़फोड़ नहीं हो, लाठी-भाटा जंग नहीं हो या गोलियां आदि नहीं चले। जब भी ऐसा हो जाए इस आंदोलन को हिंसक घोषित कर दिया जाता है। इस प्रकार गांधीजी के अनुयायियों ने अहिंसा एवं सत्याग्रह की गांधीजी की ही परिभाषा को बदल दिया है। आज के अहिंसक आंदोलन का आधार किसी को कष्ट नहीं पहुंचे, यह नहीं रहा बल्कि यह रहा है कि उसमें लाठी, भाटा या गोली न चले। लेकिन क्या ये वास्तव में अहिंसक है? यदि आपके आंदोलन के कारण किसी मरीज को अस्पताल पहुंचने में देरी होती है और वह मर जाता है तो भी क्या उक्त आंदोलन अहिंसक है? आज आंदोलन के कारण सड़कें बंद की जाती हैं, बाजार बंद करवाए जाते हैं, खाद्यान्न के आवागमन के मार्ग को अवरुद्ध करने की धमकियां दी जाती हैं, पटरियों पर धरने देकर रेलें रोकी जाती हैं, आम जनता के जनजीवन को ठप्प किया जाता है, क्या यह सब उन निर्दोष लोगों के लिए कष्टकारक नहीं है जिनका आंदोलन कर्ताओं की मांगों से कोई संबंध नहीं है? लेकिन इस ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। कोई किसी के कष्ट के प्रति संवेदनशील नहीं होता और फिर भी अपने आपको अहिंसक कहते हैं। जो गांधीजी अपने आंदोलन के कारण अंग्रेज सरकार के अधिकारियों को भी कष्ट नहीं देने की बात करते थे उनकी आत्मा उनके अनुयायी होने का दावा करने वालों द्वारा उनके ही सिद्धान्तों की ऐसी दुर्गति देखकर निश्चित रूप से रुदन करती होगी। लेकिन विषय यह भी है कि गांधीजी की किसको पड़ी है। उनके जीवित रहते ही उनके जनमानस पर प्रभाव का दुरुपयोग होना प्रारम्भ हो गया था और जब वे उसे भी नहीं रोक पाए तो अब तो कोई अपेक्षा करना भी बेकार है। कुल मिलाकर बात यह है कि वर्तमान के आंदोलन को अहिंसक कहना अपने आप में अहिंसा शब्द के साथ घिनौना मजाक है और इस मजाक में आम आदमी से लेकर देश की व्यवस्था में उच्च स्तर पर बैठे लोग तक शामिल है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

अहंकार से आहत और छल से छलनी किसान

देश में इन दिनों किसान आंदोलन की गूंज सुनाई दे रही है। केन्द्र सरकार द्वारा कृषि सुधारों के नाम पर बनाए गए कानूनों को लेकर घमासान मचा हुआ है, पक्ष-विपक्ष में विभिन्न तर्क दिए जा रहे हैं। किसानों की तरफ से न्यूनतम समर्थन मूल्य और मंडियों की समाप्ति को लेकर आशंकाएं जताई जा रही हैं वहीं सरकार आश्वासन देकर इन आशंकाओं का निवारण करना चाहती है। लेकिन इस परिदृश्य पर विचार किया जाए तो यही बात उभर कर आती है कि वास्तव में भारत का किसान अहंकार और छल का शिकार होकर राजनेताओं की कठपुतली मात्र बनकर रह गया है। भारत की केन्द्र सरकार किसानों को लेकर कोई कानून बनाती है लेकिन कानून बनाने से पहले उसके बारे में किसान से पर्याप्त परामर्श करना आवश्यक नहीं समझती। किसानों से ही नहीं बल्कि कृषि विशेषज्ञों से भी इस बारे में पर्याप्त विचार विमर्श किया गया हो, ऐसी कोई पुष्ट जानकारी भी बाहर निकल कर नहीं आई है। राजनीतिक पार्टियों से विमर्श तो वर्तमान व्यवस्था में प्रचंड बहुमत के अहंकार में डूबी सरकार से अपेक्षित भी नहीं है। इसी अहंकार का परिणाम है कि देश का किसान महीनों लंबे आंदोलन के बाद देश की राजधानी को घेरने आ जाता है लेकिन सरकार प्रारम्भ में तो तब भी वार्तालाप मात्र करने के लिए तारीख देती है या शर्तें लादती हैं। यही नहीं बल्कि सरकार का अंध समर्थन करने वाला आभासी वर्ग चंद आसामाजिक लोगों के वक्तव्यों, चेहरों व करतूतों को आधार बनाकर सम्पूर्ण आंदोलन समूह को देशद्रोही, खालिस्तानी , अराजक आदि उपमाओं से विभूषित कर अपने एवं अपने नेताओं के अहंकार को प्रकट व पोषित भी करता है। इस प्रकार किसान इस अहंकार से आहत होकर खेत की अपेक्षा सड़क को अपने पुरुषार्थ का क्षेत्र बनाने को मजबूर है। लेकिन किसान केवल अहंकार से ही आहत नहीं है बल्कि वह उसके साथ पूर्व में किए गए एवं वर्तमान में किए जा रहे छल से भी छलनी है। इसका ताजा उदाहरण इस वर्ष बाजरे की कीमत है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

बनासकांठा प्रान्त में संपर्क स्नेहमिलनों की श्रृंखला का प्रारंभ

गुजरात के मेहसाणा संभाग के बनासकांठा प्रान्त में 29 नवंबर 2020 (रविवार) से संपर्क स्नेहमिलनों की श्रृंखला प्रारम्भ की गई। इसके अंतर्गत 'संघ आपके द्वार' मंत्र को चरितार्थ करने के उद्देश्य से प्रत्येक रविवार को प्रान्त में एक स्नेहमिलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें समाजबंधुओं को संघदर्शन व सांघिक कार्यप्रणाली से परिचित कराया जा रहा है। इसी के अनुसार 29 नवम्बर तथा 06 दिसंबर को थराद तहसील के वलादर गांव में स्नेहमिलन का आयोजन किया गया। स्नेहमिलन में प्रांतप्रमुख अजीतसिंह कुणघेर के साथ शैलसिंह वलादर, डॉ. प्रवीणसिंह वलादर, भगवान सिंह वलादर, श्रवणसिंह वलादर भी उपस्थित रहे। डॉ प्रवीणसिंह वलादर ने स्नेहमिलन में उपस्थित समाजबंधुओं को संघ का परिचय देते हुए कहा कि आज श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य समाज की बहुत बड़ी आवश्यकता है। समाज के युवाओं के चरित्र निर्माण का महत्ती कार्य आज केवल इसी प्रणाली से संभव है। प्रांतप्रमुख कुणघेर ने कहा कि जिस प्रकार हमारे शरीर में रीढ़ की हड्डी सबसे महत्त्वपूर्ण होती है वैसा ही महत्त्व संघ का समाज के लिए है। इस बात को हम भली-भांति समझकर संघ कार्य में सहयोगी बनें। यही सच्ची समाजसेवा होगी। कार्यक्रम में मातृशक्ति की भी सहभागिता रही।

करणी माता मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा

पाली जिले के छोटी रानी गांव में 5 दिसम्बर को करणी माता के मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित किया गया। सुआ बाईसा, रतन भारती, पीरोसा रावत सिंह, उमा भारती, नवा नाथ आदि संतों के सानिध्य में आयोजित इस समारोह में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ करणी माता मंदिर की मूर्ति की स्थापना की गई। इस अवसर पर निकट के गांवों के समाज बंधुओं के साथ-साथ स्थानीय ग्रामीण भी उपस्थित रहे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

आभार

नागौर जिला परिषद के **वार्ड संख्या 32** की ग्राम पंचायत **चावण्डिया, परेवड़ी, शिव, प्रेमपुरा, चितावा, पांचवा, कुकनवाली, दीपपुरा, भांवता, अड़कसर** के समस्त सम्मानित मतदाताओं एवं कार्यकर्ताओं का समर्थन व सहयोग के लिए कृतज्ञता पूर्वक हार्दिक आभार।

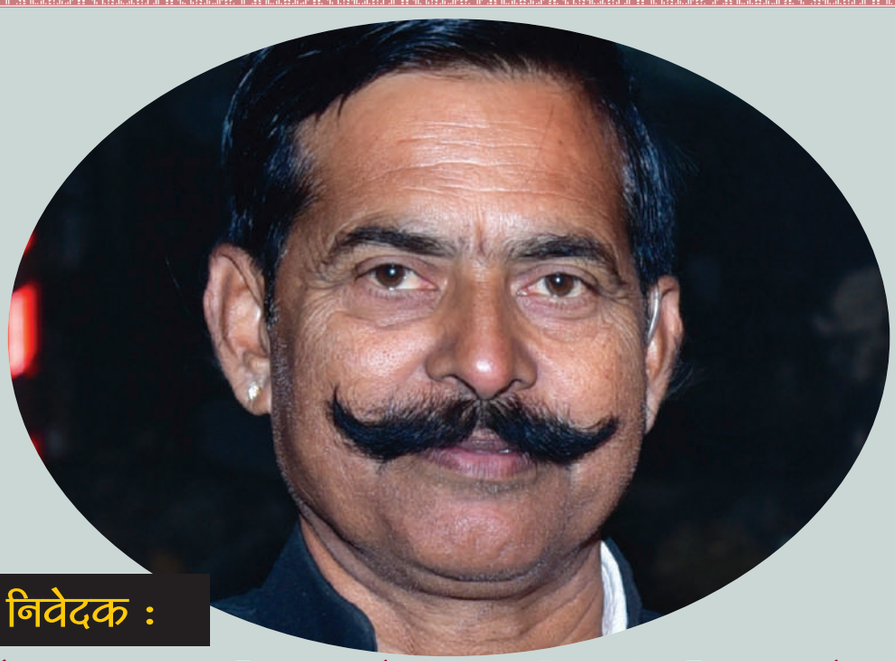

निवेदक :

कैप्टन शंकरसिंह राठौड़ पुत्र श्री सुमेरसिंह राठौड़

जिला परिषद सदस्य, नागौर। मु. कोकपुरा, पो. दौलतपुरा, तहसील कुचामन सिटी, नागौर

देशभर में श्रद्धापूर्वक मनाई पूज्य श्री की पुण्यतिथि

मध्य गुजरात

जोधपुर

(पृष्ठ एक से लगातार)

इस भजन में एक भक्त अपनी अकिंचनता का भाव व्यक्त करते हुए अपने आराध्य से अपने अवगुणों को अनदेखा करने की प्रार्थना करता है। वह अपनी योग्यता अथवा पात्रता के आधार पर नहीं अपितु अपने पूज्य की महानता के आधार पर उसकी कृपा प्राप्त करने का निवेदन करता है। जिस प्रकार पारस पत्थर अपने संपर्क में आने वाले सभी प्रकार के लोहे को स्वर्ण में रूपांतरित कर देता है चाहे वो लोहा मंदिर में प्रयोग किया गया हो अथवा बधिक द्वारा शिकार में उपयोग लिया गया हो, उसी प्रकार समदर्शी महापुरुष भी अपनी शरण में आने वाले सभी का उद्धार उसके गुणों-अवगुणों को अनदेखा करके करते हैं। जिस प्रकार समुद्र में मिलने पर सभी प्रकार का जल सागर ही बन जाता है चाहे वह नदी का हो अथवा नाले का उसी प्रकार संघमय बन जाने पर स्वयंसेवक के गुण-अवगुण भी संघ में ही विलय हो जाते हैं और संघ व पूज्य तनसिंह जी की कृपा उस पर बरसने लगती है। संघ के स्वयंसेवक भी संघ एवं पूज्य श्री तनसिंह जी के प्रति ऐसी ही अकिंचनता का भाव रखकर उनकी कृपा से संघकार्य करते रहें, सभी ने ऐसी प्रार्थना की।

गुजरात में मेहसाणा संभाग में वर्चुअल संभागीय शाखा में पुण्यतिथि मनाई गई। प्रातःकाल 7 से 8 बजे तक आयोजित शाखा के दौरान रामधुन का गायन किया गया तथा वरिष्ठ स्वयंसेवकों द्वारा पूज्य तनसिंह जी के व्यक्तित्व व कृतित्व को स्वयंसेवकों के सामने रखा गया। संभाग प्रमुख विक्रम सिंह कमाणा ने बताया कि पूज्य श्री तनसिंह जी ने संघ रूपी ऐसा अनूठा मार्ग हमें प्रदान किया है जिसपर चलकर हम सहज ही महान जीवनलक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। वे ऐसे युगपुरुष थे जिन्होंने पथ विचलित क्षत्रिय कौम को पुनः सही मार्ग दिखाया ही नहीं बल्कि अपनी तपस्या से हम सबको इस मार्ग पर प्रवृत्त भी किया। वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह हरदासकाबास ने पूज्य श्री तनसिंह जी के साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि असाधारण प्रतिभा और योग्यता के होते हुए भी तनसिंह जी अत्यंत साधारण बन कर रहते थे और अपनी समस्त प्रतिभा व योग्यता का केवल समाजहित में ही उपयोग किया। उनके जैसे महापुरुष संसार में कभी कभी आते हैं और अपनी आत्मज्योति से भटके हुए संसार को राह दिखाते हैं। उनके बताए मार्ग पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अजीत सिंह कुणघेर ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया तथा पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन संघर्ष में विजयी होने की बात कही। कार्यक्रम में संभाग के तीनों प्रान्त - मेहसाणा, बनासकांठा व साबरकांठा के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन वनराज सिंह भैंसाणा ने किया। पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में मेहसाणा प्रान्त में दढियाल, पाटण तथा जगन्नाथपुरा में भौतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। दढियाल में आयोजित कार्यक्रम में संभाग प्रमुख विक्रम सिंह कमाणा के साथ दिग्विजय सिंह अम्बोड तथा इंद्रजीत सिंह जैतलवासना उपस्थित रहे। इस दौरान क्षेत्र के समाजबंधुओं के साथ मातृशक्ति ने भी कार्यक्रम में उपस्थित रहकर पूज्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी प्रकार पाटण शहर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रायः 9-10 बजे तक आयोजित कार्यक्रम धर्मेंद्रसिंह मोटीचंदुर तथा शक्ति सिंह जाखाना की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार जगन्नाथपुरा में शाखा स्तर पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसका संचालन महेश सिंह जगन्नाथपुरा ने किया। मेहसाणा संभाग के ही बनासकांठा प्रान्त के अंतर्गत वलादर गांव में भी पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें प्रांतप्रमुख अजीतसिंह कुणघेर उपस्थित रहे। उन्होंने उपस्थित समाजबंधुओं को पूज्य तनसिंह जी के जीवन की प्रेरक घटनाएं सुनाते हुए कहा कि संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली हमारे समाज की सभी समस्याओं की रामबाण औषधि है। यह समष्टि के माध्यम से व्यष्टि और परमेष्टि को जोड़ने वाला मार्ग है। जोधपुर के जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय पुराना परिसर के खेल मैदान में पुण्यतिथि कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए रघुवीर सिंह बेलवा राणाजी ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने ईश्वर की समष्टिगत आराधना का वैज्ञानिक स्वरूप श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें प्रदान किया। समाज की सेवा द्वारा ईश्वर तक पहुंचने का सरलतम मार्ग है श्री क्षत्रिय युवक संघ। इस दौरान भूपेन्द्र सिंह सांकड़ा, भैरूसिंह चाबा, देवराज सिंह डेलासर, शेरवीरसिंह नाथडाऊ, जीवन सिंह भांडु, अरविंदसिंह सेतरावा, रेवतसिंह जाजवा, पेपसिंह, अनोपसिंह चाँदरख सहित अनेकों युवाओं ने उपस्थित रहकर पूज्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। बालोतरा प्रान्त में शाखा स्तर पर पुण्यतिथि का कार्यक्रम आवासन मंडल में स्थित विवेकानंद उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित हुआ जिसमें प्रान्त प्रमुख राण सिंह टापरा उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित स्वयंसेवकों ने पूज्यश्री की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए तथा सहगीत व भजनों का गायन किया। इसी प्रकार बालोतरा संभाग के सिवाना प्रांत के कुंडल गांव में भी शाखा स्तर पर पुण्यतिथि मनाई गई। इस दौरान शाखा के 80 स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री को पुष्पांजलि अर्पित की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मनोहर सिंह सिनेर ने कहा कि इस संसार से जाने के बाद केवल ऐसे महापुरुषों को ही स्मरण किया जाता है जिन्होंने समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए बलिदान किया है। पूज्य श्री ने न केवल स्वयं त्यागी और तपस्वी जीवन बिताया बल्कि हमें भी एक ऐसा व्यावहारिक मार्ग प्रदान किया है जिस पर चलकर हम भी मानवता की सेवा कर सकते हैं। कार्यक्रम में थान सिंह खबडाला, ओंकार सिंह, नागेंद्र सिंह, जलेंदर सिंह सिणेर, पेप सिंह कुंडल सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। शिव प्रान्त के भिंयाड मण्डल की मातेश्वरी शाखा में भी पुण्यतिथि मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रान्त प्रमुख राजेन्द्रसिंह भिंयाड ने बताया कि हमें पूज्य तनसिंह जी के विचारों व आदर्शों पर चलने का सतत् अभ्यास करना चाहिए। उनके द्वारा लिखे गये साहित्य को भी पढकर हमारे जीवन व्यवहार में उतारने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान मातेश्वरी शाखा के 110 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में भिंयाड सरपंच तनेराज सिंह, गिरवरसिंह राजपुरोहित, ज्ञानगिरी गोस्वामी, रमेशकुमार, विक्रम कुमार, रोहिताश सहित कई गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे। सभी ने पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करके उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। जैसलमेर संभाग में पूज्य श्री तन सिंह जी की पुण्यतिथि का कार्यक्रम प्रातः 5:00 बजे वर्चुअल शाखा के माध्यम से मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम में भजन कीर्तन के साथ-साथ पूज्य श्री तन सिंह जी रचित सहगीतों का भी गायन किया गया। साथ ही श्रद्धेय नारायणसिंह जी रेड़ा द्वारा लिखित 'मां के मुख से' आलेख का पठन भी किया गया। रतन सिंह बडोड़ागांव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पूज्य श्री तन सिंह जी का जीवन एक युगपुरूष का जीवन चरित्र है जिन्होंने एक साधारण परिवार में जन्म लेकर मनुष्य जीवन के सभी पहलुओं को अपने जीवन में आदर्श रूप में चरितार्थ कर के दिखाया तथा हमारे लिए जीवनलक्ष्य की प्राप्ति को बहुत ही सरल कर दिया। उनका सम्पूर्ण जीवन हमें ध्येयनिष्ठ बनने की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम में जैसलमेर संभाग के अतिरिक्त श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) तथा दिल्ली से भी स्वयंसेवक जुड़े। नागौर संभाग में पूज्य श्री की पुण्यतिथि वर्चुअल संभागीय शाखा में मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक देवीसिंह मामडोदा तथा संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा उपस्थित रहे। मामडोदा ने पूज्य श्री के साथ बिताए समय के संस्मरण साझा किए तथा कहा कि हमारा सौभाग्य है कि ऐसे महापुरुष ने हमारे समाज में जन्म लिया। तनसिंह जी का सम्पूर्ण जीवन त्याग और बलिदान का जीवंत उदाहरण है। उनकी प्रेरणा से हम भी संघमार्ग पर चलकर अपना जीवन सार्थक करें यही ऐसे महापुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इसके अतिरिक्त करणू तथा छापड़ा शाखाओं में भी पुण्यतिथि कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिनमें पूज्य श्री की स्मृति में भजन-कीर्तन किया गया। इसी प्रकार उदयपुर शहर में पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में पारिवारिक शाखा में भजन संध्या का कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें बृजराज सिंह खारड़ा, फतहसिंह भटवाड़ा सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त बायतु प्रांत के अंतर्गत नागणेची मंदिर, चिड़िया में तथा चांदेसरा में भी पूज्य श्री तन सिंह जी की पुण्यतिथि मनाई गई। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

उदयपुर

भिंयाड़

(पृष्ठ चार का शेष)

अहंकार... राजस्थान की कांग्रेस सरकार ने केन्द्रीय कानूनों का विरोध करने के लिए उनमें संशोधन कर राजस्थान के लिए संशोधित कानून बनाए जिसमें न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम मूल्य पर खरीद को प्रतिबंधित करने का प्रस्ताव शामिल किया। हालांकि केन्द्रीय कानूनों के खिलाफ कानून पारित करना भारत के वर्तमान संविधान के अनुसार कितना संवैधानिक है, यह अलग प्रश्न हो सकता है लेकिन बात तो बाजरे की कीमत की हो रही है। केन्द्र सरकार ने बाजरे का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2150 रुपए घोषित किया है। पड़ौस के राज्य हरियाणा में यह 2150 रुपए प्रति क्विंटल में खरीदा जा रहा है लेकिन राजस्थान का किसान 1300 रुपए प्रति क्विंटल में बेचने को मजबूर है। क्या इससे बड़ा कोई छल हो सकता है कि आप देशभर में किसान का हितैषी बनने का तमगा लेने के लिए कानून बनाकर न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद को अनिवार्य बनाने की बात कर रहे हैं और स्वयं के शासित राज्य में अपनी उपज को न्यूनतम समर्थन मूल्य से लगभग 40 प्रतिशत कम पर बेचने को मजबूर किसान की सुध ही नहीं ले रहे हैं। यह तो एक नमूना है छल का। ऐसे छल किसान के साथ होते रहे हैं और हुए जा रहे हैं। पूंजीपतियों के हितों को साधने के लिए किसान हित का आवरण चढ़ा कर किसानों को ठगने का प्रयास आज पहली बार नहीं हो रहा बल्कि यह इस देश के किसानों की नियति बन चुका है। आज विपक्षी लोग वर्तमान प्रधानमंत्री के गुजरात के मुख्यमंत्री रहते तत्कालीन प्रधानमंत्री को न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी गारंटी देने बाबत लिखे पत्र का हवाला देकर पूछ रहे हैं कि आपने तब मांगा था तो अब लागू क्यों नहीं कर रहे? निश्चित रूप से यह पूछा ही जाना चाहिए। लेकिन साथ में यह भी तो पूछा जाना चाहिए कि आप अब मांग रहे हो पर तब तो आपके ही प्रधानमंत्री थे, आपने क्यों नहीं मांग को स्वीकार किया? यह किसानों का ही नहीं बल्कि भारत का दुर्भाग्य है कि देश के सत्ता प्रतिष्ठानों की बागड़ोर आजादी के बाद से ही ऐसी प्रवृत्ति के हाथों में है जो गैर जिम्मेदार हैं। जिनकी भाषा उनकी भूमिका के अनुरूप बदलती रहती है। जब सत्ता में रहते हैं तो कुछ और बोलते हैं और सत्ता से बाहर रहने पर कुछ और। ऐसी ही विडंबना यह है कि किसानों का नेता बनने वाले लोग ही किसानों के हितों पर कुठाराघात करने में आगे रहते हैं। ऐसे सभी लोगों का प्रथम लक्ष्य राजनीति होता है और ज्यों ही उस लक्ष्य की गर्माहट महसूस करते हैं ये लोग उन्हीं लोगों के हितों से सर्वप्रथम समझौता करते हैं जिनके बल पर ये पनपे हैं। ऐसा केवल किसानों के साथ होता है ऐसा नहीं है बल्कि हर आंदोलन और संगठन की परिणति इसी प्रकार होती है। ऐसे नेताओं में किसी की यह हिम्मत नहीं होती कि वह यह कह सके कि वह जीवन भर इसी भूमिका में रहेगा। कभी इस काम की अपेक्षा राजनीति के किसी पद को श्रेष्ठ नहीं मानेगा और जीवन में कभी ऐसा अवसर आने पर निर्ममता पूर्वक ठुकरा देगा। जब तक ऐसे अगुआ नहीं मिलेंगे तब तक सभी आंदोलन और संगठन इसी प्रकार अहंकार से आहत और छल से छले जाते रहेंगे जैसा अब तक होता आया है। लेकिन इन सब के बीच एक और बात भी विचारणीय है। क्या किसान शब्द आज वास्तव में खेती करने वाले सामान्य किसान का परिचायक रहा है या इस शब्द का भी बड़ी जमीनों के मालिकों एवं भरपूर फसल उपजा कर अब तक की सरकारों से किसान हित के नाम पर वैध अवैध लाभ लेने वाले लोगों ने पेटेंट करवा दिया है। तथाकथित किसान छोटी-छोटी जोत वाले उन बहुसंख्यक वास्तविक किसानों का हक ही नहीं मारते बल्कि उनके नाम से सरकारों को धमका कर अपनी वैध अवैध मांगों को मनवाते हैं। ऐसा वर्ग कभी नहीं चाहता कि जो ढर्रा चल रहा है उसमें किसी भी प्रकार का फेरबदल किया जाए और इसीलिए वह ऐसे हर प्रयास का विरोध करता है जिसमें उसके हितों पर आंच आती हो। वर्तमान किसान आंदोलन को भी इस विकृति से मुक्त नहीं माना जा सकता। इसका अर्थ यह नहीं है कि नए कानून निरापद हैं, उनमें कमियां नहीं है लेकिन अब तक चली वार्ताओं के विभिन्न दौरों में केन्द्र सरकार उन कमियों को दुरस्त करने को तैयार हुई है, ऐसे में बात आगे बढ़नी चाहिए। लेकिन नई व्यवस्था को स्वीकार ही न करने की हठधर्मिता तो एक अन्य प्रकार का अहंकार है। ऐसे ही अलग-अलग अहंकारों और छलों का शिकार है भारत का वास्तविक किसान। बस अहंकार करने वाले, छल करने वाले पात्र बदलते जा रहे हैं।

(पृष्ठ एक का शेष) क्षात्र धर्म... विगत लम्बे समय के बाद भौतिक रूप से यह बैठक रखी गई। बैठक में कोरोना काल में वर्चुअल माध्यम से किए गए प्रयासों की समीक्षा की गई। बैठक में तय किया गया कि श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का आधार श्री क्षत्रिय युवक संघ है। संघ से परिचित हुए बिना फाउंडेशन का काम भली प्रकार नहीं हो सकता और संघ का व्यवहारिक परिचय शिविर में जाकर ही हो सकता है। इसीलिए प्रति 3 माह में फाउंडेशन के सहयोगियों के लिए संघ का एक शिविर परिस्थितियां सामान्य होने के बाद रखा जाए। इस प्रकार वर्ष में न्यूनतम चार शिविर फाउंडेशन के सहयोगियों के लिए हों। साथ ही सहयोगियों के साथ नियमित संवाद आवश्यक है, इसके लिए प्रतिदिन शाम को एक वर्चुअल शाखा प्रारम्भ की जाए जिसमें संघ दर्शन की प्रारंभिक पुस्तक 'समाज चरित्र' पर चर्चा की जाए। प्रत्येक सहयोगी अपने-अपने परिचितों में से कम से कम 20 लोगों की सूची बनाए जिनको वह संघ से परिचित करवाना चाहता है। उन्हें जब भी अवसर मिले संघ के किसी कार्यक्रम में लेकर जाए एवं इस प्रकार जो प्रसाद स्वयं ने पाया है उसे अपने साथियों में बांटें। आर्थिक पिछड़ा वर्ग आरक्षण में कुछ राज्यों में उम्र आदि की छूट देनी प्रारम्भ की है। उसके आधार पर राजस्थान में भी इसी प्रकार की छूट के प्रावधान के लिए मुहीम चलाने का निर्णय लिया गया। शीघ्र ही इसके लिए पूर्व की भांति जन प्रतिनिधियों से लेकर सरकार तक बात पहुंचाई जाएगी। इसके लिए आगामी दिनों में अभियान चलाया जाएगा। मुद्दों के चयन को लेकर भी सावधानी की बात की गई। अपराध, मारपीट, व्यक्तिगत झगड़ों को जातीय स्वरूप देने के मामले आदि से बचने का निर्णय हुआ। यदि ऐसी कोई घटना होती है जिसमें समाज के किसी व्यक्ति के साथ अन्याय हुआ है तो स्थानीय सहयोगी उनका सहयोग करें लेकिन पूरे फाउंडेशन को ऐसे मुद्दों में शामिल होने से बचाना चाहिए। अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग जातीय समीकरण हैं इसीलिए किसी भी जाति के खिलाफ या पक्ष की बात करने की अपेक्षा हमारी स्वयं की बात मजबूती से रखने का निर्णय लिया गया। बैठक में संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकावास, केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ, यशवर्धनसिंह झेरली, श्रवणसिंह बगड़ी, अरविंदसिंह बालवा आदि लोग उपस्थित रहे।

राजस्थान के 21 जिलों में संपन्न पंचायती राज चुनावों में निम्न राजपूत प्रधान निर्वाचित हुए हैं।

जिला प्रमुख : जिला- अजमेर
1. मसूदा - मीनू कंवर
2. केकड़ी - होनहार सिंह राठौड़

जिला- पाली
3. सुमेरपुर - उर्मिला कंवर
4. रानी - श्यामा कंवर

जिला- जैसलमेर
5. जैसलमेर - रसाल कंवर
6. सम - तन सिंह
7. सांकड़ा - भगवत सिंह पंवार
8. फतेहगढ़ - जनक सिंह

जिला- बाड़मेर
9. बालोतरा - भगवत सिंह जसोल
10. कल्याणपुर - उम्मेद सिंह अराबा
11. बाड़मेर - पवन कंवर

जिला- झालावाड़
12. झालरापाटन- भावना झाला
13. भवानी मंडी- सुल्तान सिंह
14. डग- भैरों सिंह परिहार

जिला- जालोर
15. चितलवाना - प्रकाश कंवर
16. रानीवाड़ा - राघवेंद्र सिंह
17. आहोर - संतोष कंवर

जिला- नागौर
18. भेरुन्दा - जसवंत सिंह

जिला- उदयपुर
19.भींडर - हरि सिंह सोनिगरा

जिला- राजसमंद
20. रेलमगरा - आदित्य प्रताप सिंह
21. देवगढ़ - कल्पना कंवर
22. राजसमंद - अरविंद सिंह
23. कुंभलगढ़-कमला कंवर दसाणा

जिला- भीलवाडा
24. कोटड़ी - करण सिंह बेलवा
25. हुरड़ा - किशन सिंह राठौड़
26. बनेड़ा - मुन्ना कंवर
27. सुवाणा - फूल कंवर चुंडावत

जिला- बूंदी
28. केशवराय पाटन-वीरेंद्र सिंह हाड़ा

जिला- सीकर
29. दांतारामगढ़ - गेंद कंवर

जिला- चित्तौड़गढ़
30. भदेसर - सुशीला कंवर
31. भूपालसागर - हेमेंद्र सिंह राणावत
32. गंगरार - रविराज सिंह
33. चित्तोड़ - देवेंद्र कंवर

अभी संपन्न जिला परिषद चुनावों में निम्न राजपूत जिला प्रमुख निर्वाचित हुए हैं।

पाली - रश्मि सिंह, रोहिटगढ़
उदयपुर - ममता कंवर पंवार, गोराणा
जैसलमेर - प्रताप सिंह, रामगढ़
अजमेर - सुशीला कंवर, पलाड़ा
सीकर - गायत्री कंवर, बाजौर
बून्दी - चंद्रावती कंवर, पिपल्या

(पृष्ठ चार का शेष)

यह कैसा... आश्चर्य तो तब होता है जब आजकल सरकार समर्थित बंद आयोजित किए जाते हैं। जिन लोगों को कानून व्यवस्था का पालन करवा कर जनता के कष्ट का निवारण करना होता है वे स्वयं ही कष्ट दायकों के सहयोगी बनते हैं। ऐसे में तो यही कहा जा सकता है कि जब बाड़ ही खेत को खाए तो खेत का बंटाधार अवश्यंभावी है। ऐसा ही बंटाधार सम्पूर्ण व्यवस्था का नित्य प्रति होता जा रहा है और जिम्मेदार लोग आंखे मूंदकर उसमें अपनी लाभ-हानि देखकर तदनुरुप निर्णय कर रहे है। सिद्धान्तों का अपनी सुविधानुसार उपयोग करने के लिए उनकी परिषाभाओं में स्वयं की सुविधानुसार फेरबदल करने का यह प्रयास वर्तमान पीढ़ी एवं उनकी आदर्श पूर्व पीढ़ी का प्रिय शगल रहा है और उसी का परिणाम है कि ये परिभाषाएं दिनों दिन विकृत होती जा रही है।

(पृष्ठ एक का शेष)

पंचायती चुनाव... हमें यदि बंधना ही है तो हमारी क्षात्र परम्परा से बंधना चाहिए और उसकी स्थापना में सहयोग मिलने की संभावना का ही वरण करना चाहिए, उसे ही वोट देना चाहिए। इन चुनावों ने एक और संदेश दिया कि सत्तारूढ़ दल को इनमें हार का मुंह देखना पड़ा। ऐसा प्रायः कम ही होता है कि सत्तारूढ दल स्थानीय चुनावों में पराजित हो जाए। लेकिन ऐसा हुआ है। ग्रामीण भारत भारत की असली आवाज है और उस आवाज के संदेश को राज्य के सत्तारूढ़ दल को समझना चाहिए कि चालबाजियां एक सीमा के आगे काम नहीं करती। उनकी सीमा सीमित दूरी तक ही होती है।

(पृष्ठ छह से लगातार)

पुण्यतिथि...

गुड़ामालानी प्रान्त के बूठ गांव में भी पुण्यतिथि पर भी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सूरत प्रान्त की शाखाओं में भी पुण्यतिथि के अवसर पर भजन-कीर्तन का कार्यक्रम हुआ। गुजरात के भावनगर शहर की पार्थ शाखा में भी पुण्यतिथि मनाई गई। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की वर्चुअल शाखा में पुण्यतिथि के अवसर पर पूज्यश्री तनसिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस दौरान फाउंडेशन के सहयोगी यशवर्द्धन सिंह झेरली, महेंद्र सिंह तारातरा, अरविंद सिंह बालवा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में कहा गया कि अनेकों लोग बड़े-बड़े काम करके बड़ी-बड़ी भौतिक उपलब्धियां प्राप्त करते हैं परंतु ऐसे व्यक्ति जब संसार से चले जाते हैं तो वे जल्दी ही सभी के द्वारा भुला दिए जाते हैं। वहीं कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो कुछ ऐसे कार्य करते हैं जो उनके संसार से विदा होने के बाद भी आने वाली पीढ़ी के लिए उपयोगी व प्रेरणादायक होते हैं जैसे कि साहित्य की रचना आदि। ऐसे व्यक्ति संसार से जाने के बाद भी अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवित रहते हैं। पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने जीवनकाल में उपरोक्त दोनों प्रकार के कार्य तो किए ही, किन्तु इनके अतिरिक्त उन्होंने एक अन्य कार्य भी किया जो केवल कोई युगपुरुष ही करने में सक्षम है। उन्होंने एक ऐसा मार्ग दिया जिसके माध्यम से अन्य लोग भी उन्हीं की भाँति महानता को प्राप्त कर सके। वह मार्ग है श्री क्षत्रिय युवक संघ। इस विलक्षण प्रयोग से उन्होंने अपनी असाधारणता, प्रतिभा और महानता को सच्चे अर्थों में सामाजिक न्यास बना दिया जिसका कि सभी उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार वे केवल हमारी स्मृति में ही नहीं अपितु हमारे हृदयों में भी सदैव उपस्थित हैं और अनेक रूपों में हमारे बीच उपलब्ध रहते हैं। यही वास्तव में शाश्वत जीवन है जो तनसिंह जी जैसे बिरले महापुरुष ही जी पाते हैं।

कल्याण सिंह सांपणी को पुत्रशोक

पुष्पेन्द्रसिंह

जालोर संभाग में संघ के स्वयंसेवक कल्याणसिंह सांपणी के युवा पुत्र **पुष्पेन्द्रसिंह** का 29 नवम्बर को देहावसान हो गया। परमेश्वर दिवगंत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को इस वज्रपात को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। पथप्रेरक परिवार इस असामयिक निधन पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

अरिसाल सिंह लोहरवाड़ा को मातृशोक

श्रीमती धनकंवर

संघ के स्वयंसेवक अरिसाल सिंह लोहरवाड़ा की माताजी **श्रीमती धनकंवर** पत्नी स्व. सुखसिंह जी का 90 वर्ष की आयु में 8 दिसम्बर को देहावसान हो गया। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें। पथप्रेरक परिवार इस उनके देहावसान पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

धन्यवाद-आभार

मारवाड़ जंक्शन पंचायत समिति, वार्ड नं. 10 की महान जनता ने अपने बेटे कुशालसिंह को सेवा करने का मौका दिया है। मैं मारवाड़ जंक्शन पंचायत समिति, वार्ड नं. 10 के सभी देवतुल्य मतदाताओं का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। साथ ही आभारी हूं राजपूत समाज के सभी सामाजिक बंधुओं का जिन्होंने इस चुनाव में मुझे अपना समर्थन प्रदान किया। मैं सभी को वचन देता हूं कि मैं मारवाड़ जंक्शन पंचायत समिति एवं समाज के विकास के लिए हर समय प्रयासरत रहूंगा। एक बार फिर से सभी सामाजिक बंधु एवं देवतुल्य मतदाताओं का हृदय से आभार साथ ही भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं कार्यकर्ताओं का भी आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने पूरी गर्मजोशी के साथ इस चुनाव को जीतने में अपनी भूमिका निभाई।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org